उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय अभिरूचि एवं पर्यावरणीय जागरूकता का अनुशीलन

*रमेश बहादुर मौर्य**
*डॉ. संजय कुमार सरोज***

शोध सार :

पर्यावरण व्यक्ति के सम्पूर्ण कार्य प्रणाली को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। इसके द्वारा सम्पूर्ण मानवीय गतिविधियां एवं क्रिया कलाप प्रभावित होते हैं। पर्यावरण की जीवन में उपयोगिता के कारण इसे शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर जोड़कर बालकों में पर्यावरणीय अभिरूचि एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास किया जा रहा है। पर्यावरण में हो रहे निरन्तर ह्रास को रोकने तथा पर्यावरण को शुद्ध एवं कल्याणकारी बनाने हेतु शिक्षकों में पर्यावरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास कर विद्यार्थियों में इसका समुचित समावेशन किया जा सकता है। शिक्षा के उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में विभिन्न पर्यावरणीय घटकों की समझ एवं संज्ञानता का आधार तैयार होता है। अतः इस स्तर पर उनकी पर्यावरणीय रूचि एवं पर्यावरणीय जागरूकता की विशेष अपेक्षा की जाती है। इसलिए प्रस्तुत शोध प्रपत्र में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिरूचि एवं पर्यावरणीय जागरूकता का अनुशीलन किया गया है। इसके लिए निर्मित उद्देश्यों के सापेक्ष परिकल्पनाओं का निर्माण एवं उनका परीक्षण किया गया। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज मण्डल के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में लिया गया जिसमें से 50 छात्र एवं 50 छात्राओं से प्रतिक्रिया प्राप्त की गयी। इसके विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति अभिरूचि का स्तर उच्च है जबकि उनमें पर्यावरणीय जागरूकता की स्थिति न्यून है।

भूमिका :

पर्यावरण एक व्यापक सम्प्रत्यय है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति की सम्पूर्ण आन्तरिक एवं वाह्य दशाएं आती हैं, जो उसे चारों ओर से आवृत्त किये हुए हैं। पर्यावरण बालक के विकास से लेकर उसकी सम्पूर्ण क्रियाओं को प्रभावित करता है। बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक गुणों के विकास में वंशानुक्रम के साथ–साथ वातावरण का महत्वपूर्ण योगदान होता है। वातावरण के विभिन्न घटकों में भौतिक, मानवीय एवं सामाजिक, सांस्कृतिक आदि तत्व आते हैं। भौतिक पर्यावरण के अन्तर्गत, जल स्थल एवं वायुमण्डलीय दशाएं आती हैं। मानवीय वातावरण के अन्तर्गत विभिन्न विज्ञान एवं तकनीकी खोजों एवं मानव द्वारा विकसित संसाधनों को सम्मिलित किया जाता है। सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण के अन्तर्गत विभिन्न सामाजिक मान्यताएं, रीति–रिवाज, सामाजिक संस्थाएं, त्यौहार एवं सांस्कृतिक विरासत आदि आते हैं। इस प्रकार पर्यावरण व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास से सम्बन्धित है।

आज देश में उभर रही विभिन्न समस्याओं में पर्यावरणीय असन्तुलन एवं उसका व्यतिक्रम एक जटिल समस्या बनता जा रहा है। पर्यावरण में विभिन्न प्रकार की समस्यायें जैसे प्रदूषण, ओजोन क्षरण, बाढ़, सूखा, गैंसो का बढ़ता दुष्प्रभाव, भूकम्प, सुनामी आदि आज मानवीय अस्तित्व के लिये खतरा बनती जा रही हैं। ऐसी स्थिति में वर्तमान शैक्षिक पाठ्यक्रमों में पर्यावरणीय ज्ञान एवं उनके प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति के विकास से सम्बन्धित पाठों को रखे जाने की आवश्यकता है।आज के इस तीव्र परिवर्तनशील विश्व में सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं चर्चित शब्द पर्यावरण बन चुका है। जीवों के चारों ओर की वस्तुएं जो उनकी जीवन क्रियाओं को प्रभावित करती है वातावरण का निर्माण करती हैं। पर्यावरण जीव के अस्तित्व को प्रभावित करता है और जीव स्वयं पर्यावरण को, अर्थात दोनों के मध्य

* शोधार्थी शिक्षक- प्रशिक्षण संकाय, मुरली मनोहर टाउन पी.जी. कालेज, बलिया।
** एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक-प्रशिक्षण संकाय, मुरली मनोहर टाउन पी.जी. कालेज, बलिया।

यह अन्तःक्रिया निरन्तर चलती रहती है। इस पारस्परिक सम्बन्ध को पारिस्थितिकी कहते हैं। आज पर्यावरण की जो भी स्थिति है वह जीव एवं पर्यावरण के बीच अन्तःक्रिया का परिणाम है।

विज्ञान एवं तकनीकी प्रगति के साथ–साथ मानव सभ्यता इतनी अधिक तेजी से आगे बढ़ी की उसे पता नहीं चला कि पर्यावरणीय समस्याएं कब उग्र रूप धारण कर ली। पर्यावरण की गुणवत्ता एवं उसका संतुलन निरन्तर कम होता जा रहा है। आजकल जीवन के प्रति जो दृष्टिकोण है उसमें भौतिक, जैविक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक तत्वों में आन्तरिक सम्बन्ध एवं निर्भरता की कमी दृष्टिगत होती है। लोगों में पर्यावरण के प्रति घटती जागरूकता एवं उसके निरन्तर अवहेलना के कारण उत्पन्न असंतुलन को कम करने हेतु शिक्षा के विविध स्तरों पर प्रयास कर बच्चों को इसकी आवश्यकता, उपयोगिता एवं जीवन से सम्बद्धता हेतु जागरूक किया जा रहा है। वर्तमान में पर्यावरणीय परिस्थितियों से तालमेल स्थापित करने हेतु अतीत की मान्यताओं को पुनर्जीवित कर पर्यावरण के विभिन्न घटकों में सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता है। इसके लिए छात्रों में पर्यावरण के प्रति अभिरूचि बढ़ाने व पर्यावरणीय जागरूकता लाने के लिए उनके शैक्षिक पाठ्यचर्या में अनेक विषयवस्तुओं को समाहित किया गया है साथ ही शिक्षकों को छात्रों की पर्यावरीण रूचि बढ़ाने व उनमें इसके प्रति जागरूकता उत्पन्न करने हेतु विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है ताकि उनमें पर्यावरण के प्रति समुचित अभिरूचि व जागरूकता बढ़ायी जा सके।

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति अभिरूचि का विकास करने तथा उनकी पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाने हेतु अनेक पाठ्यक्रमीय एवं पाठ्य सहगामी क्रियायें आयोजित की जा रही है ताकि उनमें वर्तमान में उद्‌ीयमान पर्यावरणीय चुनौतियों के प्रति सजागता आ सके। इसलिए शोधार्थी द्वारा अपने शोध प्रपत्र में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय अभिरूचि एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अनुशीलन किया गया है।

अध्ययन के उद्‌देश्य :

1. उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्रओं की पर्यावरणीय अभिरूचि का अध्ययन करना।
2. उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्रओं की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं :

1. उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्रओं की पर्यावरणीय अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्रओं की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि :

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। जिनमें न्यादर्श के रूप में प्रयागराज मण्डल के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक न्यादर्श प्रतिचयन विधि से किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में उच्च प्राथमिक विद्यालयों से 50 छात्र एवं 50 छात्रा कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। प्रदत्तों के संकलन हेतु स्वनिर्मित पर्यावरण अभिरूचि मापनी एवं डॉ0 प्रवीण झा द्वारा निर्मित पर्यावरणीय जागरूकता मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, एवं क्रान्तिक अनुपात ज्ञात किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या :

सारणी–1

उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय अभिरूचि का विवेचन

Variable	N	M	S.D.	D	σ D	CR-value	सार्थकता
छात्र	50	50.96	6.28	3.66	1.3	2.81	0.05 स्तर पर सार्थक
छात्रा	50	47.30	6.73				

विश्लेषण एवं व्याख्या :

उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों की पर्यावरणीय अभिरूचि सम्बन्धी प्राप्ताँकों का माध्य 50.96 व प्रमाणिक विचलन 6.28 है जबकि उच्च प्राथमिक स्तर की छात्राओं की पर्यावरणीय अभिरूचि सम्बन्धी प्राप्ताँकों का माध्य 47.30 व प्रमाणिक विचलन 6.73 है। प्राप्त क्रान्तिक–अनुपात 2.81 है जो df 98 हेतु सार्थकता स्तर .05 पर सी0आर0 मान 2.60 से अधिक है जो सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, को अस्वीकृत कर दिया गया। मध्यमानों के अवलोकन के आधार पर उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों का माध्य छात्राओं से अधिक है। अतः उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों की पर्यावरणीय अभिरूचि छात्राओं से उच्च है। इसका सम्भावित कारण छात्रों का अपने घरेलू परिवेश के अलावा आस–पास की परिस्थितियों के साथ अन्तःक्रिया रखना इन्हें पर्यावरणीय दशाओं के साथ तालमेल का अधिक अवसर मिलना, उनके अभिभावकों द्वारा अधिक ध्यान दिया जाना तथा उनकी वैयक्तिक रूचि आदि हो सकते हैं।

सारणी–2

उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता का विवेचन

Variable	N	M	S.D.	D	σ D	CR-value	सार्थकता
छात्र	50	34.49	4.46	4.00	0.92	4.34	0.05 स्तर पर सार्थक
छात्रा	50	30.49	4.72				

विश्लेषण एवं व्याख्या :

उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता सम्बन्धी प्राप्ताँकों का माध्य 34.49 व प्रमाणिक विचलन 4.46 है जबकि उच्च प्राथमिक स्तर की छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता सम्बन्धी प्राप्ताँकों का माध्य 30.49 व प्रमाणिक विचलन 4.72 है। प्राप्त क्रान्तिक–अनुपात 4.34 है जो df 98 हेतु सार्थकता स्तर .01 पर सी0आर0 मान 2.60 से अधिक है जो सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, को अस्वीकृत कर दिया गया। मध्यमानों के अवलोकन के आधार पर उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों का माध्य छात्राओं से अधिक है। अतः उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता छात्राओं से उच्च है। इसका सम्भावित कारण छात्रों को पर्यावरण के सम्पर्क में रहने का अधिक अवसर प्राप्त होना, उनका स्थानीय परिवेश से जुड़ा होना, उन्हें विभिन्न पर्यावरणीय तत्वों को जानने के लिए अधिक अवसर मिलना, उनका पर्यावरण के साथ लगाव आदि हो सकते हैं।

निष्कर्ष :

1. उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों का माध्य छात्राओं से अधिक प्राप्त हुआ। अतः उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों की पर्यावरणीय अभिरूचि छात्राओं से उच्च है।
2. उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों का माध्य छात्राओं से अधिक पाया गया । अतः उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता छात्राओं से उच्च है।

सन्दर्भ :

1. पाण्डेय, राजीव (2008) :परिर्वतनशील परिवेश में गुणवत्ता आधारित शिक्षा का विकास, शोध प्रपत्र, राष्ट्रीय संगोष्ठी उच्च शिक्षा में गुणवत्ता संवर्धन द्वारा जगत तारन गर्ल्स डिग्री कालेज इलाहाबाद।
2. वाजपेयी, एल0बी0 (2000) :भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक प्रवृत्तियां, लखनऊ, आलोक प्रकाशन।
3. मिश्रा, संध्या (2010): पर्यावरणीय शिक्षा, मेरठ, आर0लाल बुक डिपो,
4. सिंह, सविन्द्र एवं दूबे (1983) : पर्यावरण भूगोल, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
5. गोयल (2004) : पर्यावरण शिक्षा, लखनऊ, नवनीत प्रकाशन,

***